संक्षिप्त दासबोधामृत : अध्याय 3 : "सद्गुरु_सत्शिष्य, बद्ध_मुमुक्षु_साधक_सिद्ध लक्षणे तथा देव_शोधन"

(मूळ दासबोध दशक ५ : "सद्गुरु_सत्शिष्य, बद्ध_मुमुक्षु_साधक_सिद्ध लक्षणे)

ॐ श्री गणेशाय नम: |

श्रीराम जय राम जय जय राम | जय जय रघुवीर समर्थ !

स्वधर्मकर्मी पूज्य ब्राह्मण | परी **ज्ञान** न होय सद्गुरूविण | ब्रह्मज्ञान नसता धर्म_कर्मान्चे_शीण | व्यर्थची घडती देहासी (३.१) [५.१.२०_२४]

जयाचे कृपेने सु_**ज्ञान_प्रकाश** | त्या 'सद्गुरू'ची वोळखण खास | होते फसगत ते न कळल्यास | भोन्दू, स्वार्थी, कपटीयांकडून (३.२)

माता, पिता वा ज्येष्ठ भ्राता | काका, आज्ञा, जे जे शिकविती विद्या | लिहिण्या, वाचण्या वा पैसे मिळविण्या | ते सर्वही **पूज्य 'गुरु'**च जाणावे (३.३) [५.२.४_७]

परी **जो जीवात्म्यास परमात्म्याची | ओळख पटवून सान्गडही घाली** | ऐसा 'सद्गुरू' दुर्मिळ अती | मिळे साधकासी **सद्भाग्यानेच** (३.४) [५.२_११]

अन्तरी शुद्ध ब्रह्मज्ञान | बाह्याचारी नवविधा भजन | अन्गी वैराग्य कृपाळू पण | ही काही लक्षणे '**सद्गुरू**'न्ची (३.५) [५.२.४९_७३]

आता **सत्शिष्याची लक्षणे** | जाणोनि घेऊन तैसेचि वर्तणे | तरीच '**अधिकार**' प्राप्ति होणे | शिकण्यास **सद्विद्या** 'सद्गुरू' पासुनी (३.६)

मुख्य सत्शिष्याचे लक्षण | 'सद्गुरू' वचनी अढ़ळ विश्वास | **अन्तरी निर्मळ, सदाचारशील** | निष्ठावन्त शुचिष्मन्त (३.७) [५.३.१९_२५]

शिष्य नसावा अविवेकी | कुबुद्धी, दुर्वर्तनी, दुराचारी | पापात्मा, कुभाण्ड, कुविचारी | अनधिकारी मोक्ष मार्ग चालावया (३.८) [५.३.३३_९९]

'सद्गुरू' लाभे 'सत्शिष्या'ला | हा उत्तम त्रिवेणी_संगम जाहला | गन्गा यमुना एकत्र आल्या | सरस्वती मग वाहे गुप्तरूपे (३.९)

सर्व प्रथम मन्त्रोपदेश | **श्वासोच्श्वासा गणिक 'जप'** | तेणे पाप सन्चयाचा क्षय | सत्शिष्याला घडतसे (३.१०)

'ॐ' कार जप सर्वोत्तम | अथवा सान्गती **'राम'** 'राम' | अथवा "**ॐ नम: शिवाय**" | असंख्यात दैवते आणि मन्त्रही त्यान्चे (३.११) [५.४.२_२१]

एक सान्गती सगुणोपासना | एक करविती निर्गुण धारणा | एक **अष्टान्ग योग** साधना | नाना मुद्रादिका सहित (३.१२) [५.४.२२_३०]

सर्वात श्रेष्ठ **ब्रह्मज्ञान** | आत्मज्ञान व '**समाधान**' | पाहणे आपणासच आपण | **कोऽहम् सोऽहम्, पन्च_कोषादिक** विवेके (३.१३) [५.५.३७ – ५.६.२]

प्रत्येक सजीव प्राण्याचा '**आत्मा**' | तो तर **'अंश'च परमात्म्याचा** | हा **परम 'सिद्धान्त'** वेदान्ताचा | नुमजेल तरीही विश्वासावा (३.१४)

सर्व 'विश्व'च उपजे परमात्म्या पासून | अन्ती विलीनही होते तयातच | म्हणून देहातला प्रत्येक कण, कण | '**कणतम**'ही 'अंश'च परमात्म्याचा (३.१५)

हे तार्किक तत्वज्ञान | समजले ज्याला तो धन्य धन्य | **नुमजल्यास 'विश्वास'** तरी ठेवील तो धन्य | अन्य ते भ्रान्तीत भ्रान्त होती (३.१६)

असो शरीर_रूपी **'अन्न_मय' कोष** | तो तर गोचर दृश्य सर्वास | ‘अन्न' खाऊन पचविण्यापासूनच | देह_संरक्षण, वर्धनादिक घडे सारे (३.१७)

हे सहज उमगे स्वानुभवाने | आता याच्या अन्तर्गत पाहणे | तो दृश्य होईल **चलनवलन** सारे | **‘प्राण'_मय** कोषात जे घडत राहे (३.१८)

अन्न मुखी चाऊन घशातून गिळले | इतुकेच **कर्तुत्व जीवात्म्याने केले** | नन्तर ते **सरकवीत पचवीत** नेले | **‘प्राण'_मय** कोषातिल इन्द्रियान्नी (३.१९)

‘प्राण'_मय कोषात नाना इन्द्रिये | त्यान्चा अधिपती **'इन्द्रा'**स मानिले | जाणीव_पुर्वक कार्यान्च्या पलीकडे | **‘पर'_लोक** कल्पिला हा अनुभवान्चा (३.२०)

श्वास_उच्छ्वास, रक्ताभिसरण | मल, मुत्र, अश्रु, कफ उत्सर्जन | इत्यादिक क्रियान्च्या अनुभवामधून | हा **"पन्च_प्राणमय कोष"** गोचर होई (३.२१)

प्राण, अपान, व्यान, उदान | पाचवे स्वरूप त्याचे **'समान'** | नैवेद्य समर्पून, **‘प्राणाहुती’** अर्पुन | नन्तरच जेवण्याची रूढी आहे (३.२२)

आता या कोषाच्याही पलीकडे | आंतील दालनात **'मन'** वसत राहे | जे करी **'इच्छा' "पाहिजे_नको"** रुपे | तो **मनोमय_कोष** अगोचर (३.२३)

चर्म_चक्षूस जरी **'मन' अगोचर** | पण **ज्ञान_चक्षूस ते स्पष्ट गोचर** | या अनुभवाला 'बुद्धी'च कारण | जिचे अधिपत्य **'ज्ञान_मय'** कोषी (३.२४)

आता या **'ज्ञान_मय'** कोषाच्या पलीकडे | **'सुख_दुःख'** वा **'शोक_हर्ष'** भोगणे घडे | तोच **'आनन्द_मय' कोष** पाहे | स्वामी वा अधिपती **'जीवात्मा'**च त्याचा (३.२५)

हे माझे **'जीवात्मा’** स्वरूप | ते वसे नित्यत्वे मम शरीरात | अनुभव सुख_दुःखान्चा सतत | घेते तेच **'जागृत वा स्वप्न'** अवस्थी (३.२६)

प्रगाढ निद्रेची तिसरी अवस्था | तेथे माझी 'जाणीव' हरपता | जागृत होऊन दैवी **'काली_माता’** | सर्वान्गातील **'शीण'** गिळोनि टाकी (३.२७)

म्हणुनि पुन: **'मी'** होताचि जागृत | शरीर माझे **'उत्साह’**पूर्वक | कार्ये करिते ममाज्ञेनुसार | मनो_वान्छितशी जी जी शक्य ती (३.२८)

माझी शारीरिक, बौद्धिक क्षमता | वय, लिन्ग, शिक्षण, स्मृति इत्यादिका | जाणून त्यानुसारच **'अपेक्षा’** ठेविता | अनेक दुःखे टळतील माझी (३.२९)

हेच **'आत्म_ज्ञान'** जाणुनी | परमात्म्याला **'शरण’** जाउनी | विश्व_पालकाचे स्मरण ठेउनी | जगावे मुमुक्षू साधकान्नी सदा (३.३०)

ज्या या **पृथ्वी** वर मी राहतो | चालतो, डोलतो, खातो, पीतो | तिची ही अफाट व्याप्ती देखतो | तिने मज कवटाळिले **'अलगद'** नि **'घट्ट'**ही (३.३१)

तिच्या या **प्रेमळ वत्सल कृपेविना** | क्षणार्धातच मी जाईन फेकला | अन्तरीक्षात हवा, पाण्याविना | **पृथ्वी** एक दृश्य भव्य दैवी शक्ती (३.३२)

जल हवे मला तृष्णा निववाया | वायू' तर मज श्वासागणिक हवा | गोठुनच जाइन मी तेज_उष्णतेविना | आकाश देई जागा मज हिण्डण्यासी (३.३३)

ऐशा पन्च महाभूतात्मक | दैवी शक्तीन्चा मज येतसे प्रत्यय | त्या सर्वान्चा करुनी समन्वय | **पर_ब्रह्म, परमात्मा तत्व** जाणावे (३.३४)

हेच सोपेसे **ब्रह्म_ज्ञान** | थोडक्यात पण '**नीट**' घ्यावे समजून | परमात्म्याचे अस्तित्व स्वानुभवे समजुन | मग आदर पूर्वक त्यास पूजावे (३.३५)

शुद्ध, विमल ब्रह्म_ज्ञान | **चार 'महा_वाक्या'त** जाहलेय ग्रथित | वेदान्त उपनिषदान्चा तो **निष्कर्ष** | अगदी सरळ, साधा सोपा (३.३६) [५.६.१०_१८]

मी ब्रह्म, तू ब्रह्म, तो_ती_ते ब्रह्म | आम्ही, तुम्ही सर्वजण ब्रह्म | या विश्वातील अणु रेणु ब्रह्म | **'ब्रह्म' नाही असे अस्तित्वच नाही** (३.३७)

हे '**नान्यत्_अस्ति**' तत्व बुद्धीस पटले | तो **बुद्धी_भाग्यवन्त** कृपाळूपणे | '**जीवन्मुक्त**' स्थितीतच सर्वत्र विचरे | **विश्व_रूप_दर्शन** लाभ अखण्डच त्याला (३.३८)

सर्वच_सजीव प्राणिमात्रांमध्ये | **जीवात्मा रूपाने परमात्माच वावरे** | जडांतही ऊर्जा, 'शक्ति' स्वरूपे | निर्जीव वस्तुमात्रांमध्येही तोच_तो (३.३९)

ऐशिया आत्मस्थितीत पोचती ते '**सिद्ध**'| सामान्यत: अज्ञ ते जाणावे '**बद्ध**' | '**मुमुक्षु**' ते ज्यान्ना आली थोडी जाग | '**साधक**' जे ज्ञानार्जनी गुन्तले ते (३.४०) [५.८.१ – ५.१०.४५]

(**मूळ दासबोध दशक ६ :** देव_शोधन)

कोण्या ग्रामी वा देशी राहणे | तरी तेथील प्रभूला भेटणे | ऐसे न करिता दैन्यवाणे | विघ्ने, सन्कटे छळतील (३.४१) [६.१.२_७]

ग्रामी थोर ग्रामाधिपती | त्याहुनी थोर देशाधिपती | त्याहुनी नृपती, चक्रवर्ती | **परमात्मा तैसाच सर्व_सृष्टिचा राजा** (३.४२) [६.१.८_१२]

'सगुण' सृष्टिचा राजा 'निर्गुण' | त्यास जाणणे म्हणजेच **ज्ञान** | इतर सर्व "पोट भरण्याचे ज्ञान" | त्यासी न म्हणती '**सद्विद्या**' (३.४३) [६.१.१६_२३]

अज्ञानियास भेटता अज्ञानी | 'ज्ञान' चर्चिले जाणार नाही | याकारणे 'ज्ञात्यास हुडकुनी' | अनुग्रह त्याचा घ्यायला हवा (३.४४) [६.१.२५_३१]

आदि, अन्ती ब्रह्म 'निर्गुण' | मध्यन्तरी '**स्थिती'त मायावी 'सगुण'** | पृथ्वी, आप, तेज, वायू, आकाश | पन्चमहाभूतात्मक 'विनाशी' रचना (३.४५) [६.२.८_१२]

उत्पत्ति, स्थिती आणखी **लय** | हे स्थूलाचे 'त्रिगुण' बुद्धिगम्य | तैसेच **सत्व, रज, तमोगुण** | सुक्ष्माचे त्रिगुण जाणावे (३.४६)

हे दोनही प्रकार त्रिगुणान्चे | **ब्रह्मा_हरि_हर** सगुण_ब्रह्मातले | न तुटती शस्त्राने, न जळती अग्नीने | चर्म _चक्षूसी अगोचर (३.४७)

असो पन्चमहाभूतात्मक गोचर | आणि त्रिगुणात्मक जे अगोचर | मेळवोनि '**अष्टधा_प्रकृति**'चे सार | जाणोनि घ्यावे बुद्धिमन्ताने (३.४८) [६.२.१४_२०]

स्वत:च्या देहातील '**अष्टधा_प्रकृति**' | विनाशी, बदलती मायावी वृत्ती | या देह_तुरुन्गातील बन्दिस्त '**व्यक्ति**' | त्या 'जीवात्म्या'स "**सोऽहम्**" जाणावे (३.४९) [६.२.३६_४४]

जीवात्मा तत्वत: 'निर्गुण' निर्मल | दिसेना, भासेना, नासेना, निश्चळ | घटातील आकाशा प्रमाणेच अचल | करा हेच '**आत्म_निवेदन**' आपुल्यालाच (३.५०) [६.३.१९_३१]

हे आजचे व्यक्त विश्व ब्रह्माण्ड | आयुष्याचे त्याच्या करण्यास अनुमान | '**काल' गणना**न्चे नाना '**प्रमाण**' | रचिले वेदिक ऋषी_मुनीनी (३.५१)

मानवी पूर्ण_आयुष्य शम्भर वर्षे | तैशीच ४२ लक्ष २० हजार वर्षे | एका '**चतुर्युगी**'चे '**प्रमाण**' ऐसे | सहस्र_चतुर्युगीन्चा एक '**ब्रह्म_दिन**' (३.५२)

दोन सहस्र चतुर्युगी सम्पता | एक 'रात्रन्दिन' ब्रह्माण्डाचा | ऐशी शम्भर वर्षे पूर्ण होता | ब्रह्माण्ड_प्रलय अन्त या विश्वाचा (३.५३)

आजवर अनन्त ब्रह्माण्डे ऐशी | उपजली जगली मेली भूतकाळी | 'व्यक्ताव्यक्त' परमात्मा तत्वात विरली | भविष्यातही ऐशीच पुनरावर्ततील (३.५४) [६.४.१_२]

ऐशिया सहस्त्र ब्रह्माण्डान्चा | 'काल' तो '**विष्णु**'ची फक्त एक '**घटिका**' | सहस्त्र_विष्णुन्चे पूर्णायुष्य सम्पता | एक 'पळ' सम्पेल 'ईश्वरा'चा (३.५५)

ऐशिया सहस्त्र 'ईश्वरा'न्चे | पूर्णायुष्य ज्या कालावधीत सम्पते | तेन्व्हा 'अर्ध_पळ' काल गणना होते | 'शक्ती' नाम एका व्यक्त तत्वाची (३.५६) [६.४.३_४]

'चतुर्युग' सहस्त्राणि दिनम् एकम् पितामहम् | पितामह सहस्त्राणि विष्णोः घटिकमेव च || (३.५७)

विष्णोः एक सहस्त्राणि पलम् एकम् महेश्वरम् | महेश्वर सहस्त्राणि शक्तेः अर्धम् 'पलम्' भवेत् (३.५८)

ब्रह्मा, विष्णु, ईश्वर, शक्ती | ऐशी अनन्त तत्वे कल्पिली | तरीही 'कालातीत' परमेश्वराची | आयुष्य_गणना अशक्यच असे (३.५९)

म्हणोनिया '**नेति**' '**नेति**' | ऐसे वदोनि वेद श्रुति | वाणी खुण्टोनि मौन जाहली | 'परब्रह्म_**परमेश्वर' अवर्णनीय** (३.६०) [६.४.५_६]

ऐशिया या तात्विक व्यक्तित्वात | कोण थोर ? ऐसा करिता विवाद | ''परब्रह्म'' तत्व सर्वात थोर | मानुनी ब्रह्मविद् मौन होती (३.६१) [६.४.१०_२४]

अव्यक्त अनन्तातुनिच प्रगटते '**व्यक्त**' | ज्याचे स्वरूप बदलते सतत | त्या स्वरूपान्ना दिसे आदि, अन्त | म्हणोनि त्या स्वरूपास म्हणती '**माया**' (३.६२)

मायेस असे सगुणत्वता | आकार, घनता, व्याप्ती, तप्तता | **तापमान_दाबानुकूल_व्यक्तित्वता | वयोमानानुसार बदल सातत्य** (३.६३)

प्राकृतिक नियमानुसार बदले | ते **नियम** वा '**मन्त्र**' माहीत झाले | तरी त्यानुसार बदल घडवले | मायिक रूपान्चे शास्त्र_तन्त्र तज्ञान्नी (३.६४)

हे तज्ञ जाणते 'ब्रह्म' विषयी काही | म्हणोनिया त्यान्ना '**ब्राह्मण**' नाम वा पदवी | अभ्यास, प्रयत्ने सम्प्राप्त होई | अन्यथा वस्तुतः जन्मजात 'क्षुद्र'त्व (३.६५)

प्रत्यक्ष जे जे दिसे, ते सर्वच 'मायिक' | परन्तु त्यातील मूळ 'ब्रह्म' स्वरूप | ते फक्त ज्ञानचक्षु वा बुद्धिगम्य | निर्गुण, निराकार अविनाशी (३.६६) [६.५.२_२०]

'ब्रह्म' तत्व शब्दात अवर्णनीय | 'मायिक' स्वरूपे वर्णनीय | माया भन्गे, ब्रह्म 'अभन्ग' | सर्वत्र कोन्दले सर्वकाल (३.६७) [६.५.२१_२६]

तीर्थे तीर्थे निर्मलम् ब्रह्म_वृन्दम् | वृन्दे वृन्दे तत्व_चिन्तानुवादः | वादे वादे जायते तत्व_बोधः | बोधे बोधे भासते 'चन्द्रचूडः' (३.६८)

ब्रह्मज्ञानी शास्त्रज्ञान्चा | मेळावा जमे तेच '**तीर्थ_स्थल**' समजा | ऐशिया तीर्थक्षेत्री सर्वदा | तात्विक चर्चा व्याख्याने घडती (३.६९)

ऐशिया **चर्चा, प्रवचनान्ना** ऐकुनी | स्व_आशन्कान्चे समाधान पावुनी | '**तत्व_बोध**' रूपी पुण्यार्जन करुनी | '**चन्द्रचूड**' देव_दर्शन करिती जाणते (३.७०)

नेणत्यास श्रम कायिक प्रवासाचा | भ्रामक समाधान मूर्ति दर्शनाचा | तोही लाभच पुण्यार्जनाचा | आपापुल्या कुवतीने पावती भक्त (३.७१)

पाषाण वा धातूचा 'देव' केला | कधी भन्गला वा कुणी चोरिला | तेणे अज्ञ भक्त गण दु:खी जाहला | ज्ञात्यास असले सुख_दु:ख नाही (३.७२) [६.६.३२_४८]

सृष्टि सृजनाच्या नाना पातळ्या | पहिली **काल्पनिक** केवळ कल्पना | दुसरी **शाब्दिक** वाङ्मयी रचना | लेखक कवीन्च्या प्रतिभेने प्रगटते (३.७३) [६.६.५०_५१]

तिसरी '**दृश्य**_सृष्टि' जी दिसे दृष्टीस | राहते गृह, गाव, नातेवाईक | जगणे, वावरणे या आयुष्यात | सुख_दु:ख भोग इहलोकीचे (३.७४)

चौथी सृष्टि **चित्रलेप**_सृष्टि | चित्रे, मूर्ति इत्यादिकान्ची | कारागिरान्च्या कौशल्यानुसारी | मुख्यत्वे राजादिकाश्रये सृजन यान्चे (३.७५)

पाचवी सृष्टि **स्वप्न**_सृष्टि | सहावी **गन्धर्व** गायनी वादनी | सुर, ताल, रागादिक सुश्राव्य व्यासन्गी | अनुभवास येई 'श्रोते' गणासी (३.७६)

सातवी सृष्टि **ज्वर**_सृष्टि | ज्वर वा मानसिक व्याधिने सृजित जी | व्याधिग्रस्तास आभास होई | व्याधी निवारिता अदृश्य (३.७७) [६.६.५२]

आठवी सृष्टि **दृष्टिबन्धन** | जादूगारान्चे हिप्नाटीझम | दाम्भिक साधूही यास वापरुन | फसवणूक करिती भोळ्या_भाबड्यान्ची (३.७८) [६.६.५३_५६]

ज्याचे त्यानेच खाद्यान्न भोजन | करावेच लागे आपुल्या मुखान | माझ्या देह रक्षणास्तव भक्षण | इतरान्चे मुखे घडेचना (३.७९)

तैसेचि **आपापुल्या आत्मोन्नतीसाठी** | स्वत:च उपाय करावे लागती | माता पित्यान्च्या पुण्यार्जने स्वर्गी | गती लेकुरान्ना अशक्य (३.८०)

जेथे सुखदु:खाची पटते ओळख | भावना वसती दया, क्षमादिक | तेच स्थान आध्यात्मिक '**हृदय' सान्केतिक** | शारीरिक 'हृदय' जे धडधडते ते (३.८१)

ऐशिया सान्केतिक **हृदय**_स्थानी | देवता वसती पिण्डी पिण्डी | जैशा ब्रह्माण्डी तैशाच पिण्डी | ज्ञान_चक्षू गम्य रूपे (३.८२)

ब्रह्मा, हरि, हर हे तीघेही | उत्पत्ती, स्थिती, लय स्वरूपी | देह संवर्धन संगोपन करिती | वय, लिन्ग अनुकूल ऐसे (३.८३)

हेच तीघेही "**रज, सत्व, तम**" रुपे | स्वाभाविक '**स्वभाव**' घडविती अवघे | मानवी, दैवी वा राक्षसी प्रवृत्तिने | वागणूक घडते यान्च्याच योगे (३.८४)

क्रियाशक्ति स्वरूपे सरस्वती | **ज्ञानशक्ति** स्वरूपे लक्ष्मी | **इच्छाशक्ति** स्वरूपे पार्वती | निवसतात हृदयी सर्वान्च्याच (३.८५)

या देवी सर्व भूतेषु दयादि रूपेण संस्थिता | नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः || (३.८६)

चेतना बुद्धि, निद्रा, क्षुधा | शक्ति, तृष्णा, क्षान्ति, छाया | जाति, शान्ति, कान्ति, लज्जा | लक्ष्मी, वृत्ति दया, तुष्टि: (३.८७)

मातृ, पितृ, बाधव्य भावना | मैत्री,श्रद्धा, भ्रान्ति, करुणा | व्याप्ति, चिति, इत्यादिक नाना | स्वरूपे दिव्य देवीन्ची (३.८८)

शारीरिक हृदयाच्या ठोक्यान्च्या ठेक्याचे | रक्तदाब नि सन्ख्याबल रक्त_श्वेत_पेशीन्चे | ऐशा नाना इन्द्रियान्ची अगणित गणिते | हृदयी_स्थित गणेश तत्क्षणीच सोडवी (३.८९)

एखादा काटा अथवा सुई | थोडीशी जरी वरवरच खरचटली | तरीही तिथे तात्काल खपली | गणेशाज्ञेने घाली ब्रह्मा (३.९०)

नन्तर त्या जखमेच्या 'ठिकाणा'नुसार | वय, लिन्ग आदिक गणितानुसार | जखम भरून काढिती त्रिदेव | श्रीगणेशाच्या आज्ञेनुसारच (३.९१)

यास्तवच गणेशास "**गुणेश**" नाम | तीनही गुणांवर याचे ईशत्व | अवतार त्याचाच पार्वती पुत्र | 'गजानन' रूपे सुप्रसिद्ध (३.९२)

"**चन्द्रमा मनसो जात:**" तत्वत: | **सन्कल्प विन्कल्प करण्याची 'क्षमता'** | वाढते क्षीणते पुन: पुन: | चन्द्रकोर जैसी शुक्ल_कृष्ण पक्षी (३.९३)

देहान्तर्गत अथवा बाह्य | चलन_वलनाचे नाना प्रकार | श्वासोच्छ्वास रक्ताभिसरणादिक | ती सर्व पन्च वायु देवतामुळे (३.९४)

प्राण, अपान, व्यान, उदान | समान ऐसे नामाभिधान | कर्मानुसार त्यान्ची खूण | ओळखून धन्यवाद द्यावा त्यान्ना (३.९५)

श्वासोच्छ्वास रक्ताभिसरण थान्बता | ओळखती यास '**मृत्यू** आला | पहा या देहातुन '**प्राण**' गेला | आयुष्य सम्पले 'देवाज्ञा' झाली (३.९६)

असो ही ऐशी पिण्डी_ब्रह्माण्डी | सगुण दैवतान्ची वसती अनुभवावी | त्यान्ना तोषवून कृपा भाकुनी | जगावे '**समाधान**' पूर्वक वृत्तीने (३.९७)

'परब्रह्म' तत्वत: निर्गुण असूनही | अनुभवास येते सगुण रूपातुनही | याचा प्रत्यय घेऊनि प्रत्यही | माया_ब्रह्म ऐक्यता समजोनि घ्यावी (३.९८) [६.७.६_४२]

जे प्रत्यक्ष चक्षूस दिसते | ते तसेच नसेलही ऐसे | शास्त्राधारे बुद्धीस समजते | बुद्धिपति गणेश विद्यादाता (३.९९)

सूर्य_बिम्ब दिसते उगवताना | तेन्व्हा सूर्य खरे तर वरती आलेला | नऊ मिनिटा पूर्वीच तो उगवला | हे सत्य, 'सूर्योदय_दृष्य'_मायावी (३.१००) [६.८.२_५]

नक्षत्रांत 'मेष' 'वृषभ' आकार दिसती | प्रत्यक्षात एक एक तारा किती किती | हजारो लाखो कोटि वर्षापूर्वी | त्या त्या स्थळी होता एवढेच सत्य (३.१०१) [६.८.६_१७]

ऐशी ईश्वरी 'माया' जाणावी | त्यातील '**तथ्य**' सम्पादिती ज्ञानी | विनाशी अशाश्वत त्यास 'माया' म्हणोनी | ऋषीन्नी नाम ठेविले आहे (३.१०२) [६.८.३५_४७]

गुप्त 'परीस', 'चिन्तामणी' | प्रगट उदण्ड खडे शिम्पली | कामधेनु, कल्पतरू कोठेही | चर्मचक्षुन्ना अगोचर (३.१०३) [६.९.११_१४]

पुढे जन्मान्तरी होणार काहीतरी | ही '**विश्वासाधार**' भाषा उधारीची | **याचि जन्मी येणेचि काळी | प्रत्ययास येई तेचि जाणावे** (३.१०४) [६.९.२७_३२]

मुक्याने खाल्ला 'गूळाचा' खडा | तेणे त्याचा जीव सुखावला | परी गोडी न येता शब्दात वर्णिता | गूळच दिधला खावयासी (३.१०५) [६.१०.२_१०]

परन्तु '**समाधान' जे वाटते मनाला** | वर्णन शब्दात तेही करवेना | अशक्यच '**समाधान**' समजवावयाला | गुळासम खावया देताही न येई (३.१०६) [६.१०.७]

जे जे स्वानुभवेच कळते | त्यास स्वप्रयत्न प्रयासच पाहिजे | केवळ विश्वासाच्या आधारे | आन्धळे दळण टाळावे (३.१०७) [६.१०.५४_६१]

सद्गुरु, सन्त समागमाने | वेदोपनिषदान्च्या अभ्यासाने | स्वत:च अथक_प्रयत्न केल्याने | दैवी कृपेने साधेल 'साध्य' (३.१०८)

इति श्रीसमर्थ_रामदास विरचित दासबोध ग्रन्थात् मथित "सन्क्षिप्त दासबोधामृत"सारे

"सद्गुरु_सत्शिष्य, बद्ध_मुमुक्षु_साधक_सिद्ध लक्षणे तथा अन्तर्बाह्य पिण्ड_ब्रह्माण्ड_स्थित देव_शोधन" नाम तृतीयोऽध्याय:

ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु | जय जय रघुवीर समर्थ !